

# छायबिटीज़ की कहानी डाक-टिकटों की जुबानी

आइये आज हम अपने जीवन में कुछ साल पीछे चलते हैं। बचपन के वो दिन जब हम तरह-तरह की चीजें इकट्ठा करते थे। एक अजीब सा जुनून होता था—कन्च, किताबें, तस्वीरें, तितली, चिड़ियों के पंख, फूल पत्ती अलग-अलग देश के सिक्के, डाकटिकट आदि न जाने कितने ही और शौक होते थे। और फिर उनकी अदला बदली। सबसे ज्यादा लोक प्रिय होते थे डाक टिकट क्योंकि एक छोटा सा डाक टिकट केवल मूल्य नहीं दर्शाता वो उस देश की सस्कृति, कला, वेशभूषा, आदर्श, इतिहास आदि कितने ही पहलू पर रोशनी डालता है। बहुत कुछ कहता है। आज के इस SMS और e-mail के युग में शायद बच्चे इस अनोखे रोमांच से वंचित रह गए हैं। पत्र लाने ले जाने का काम कभी कबूतर करते थे फिर गुप्तचर, फिर बना डाक विभाग और पत्रों पर देश के राजा—रानी की मोहर लगने लगी और 0 1 मई 1840 में जारी हुआ पहला डाक टिकट।

आप सोचेंगे इन सब का मधुमेह से क्या? तो आइए खुद ही देखें क्या संबंध है मधुमेह एवं डाकटिकट के बीच—

किसी भी व्यक्ति, घटना, स्थान या अविष्कार के महत्व को रेखांकित करने के लिये विभिन्न देश समय—समय पर डाक टिकट जारी करते हैं। मधुमेह जैसे रोग के संबंध में भी बहुत से डाक टिकट जारी हुए हैं। आईये आज हम इनमें से कुछ की चर्चा करते हैं।

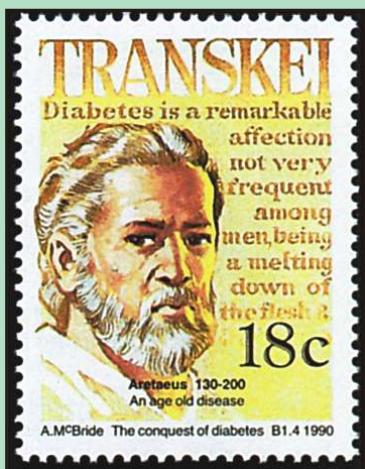
आर्टेंस (सन् 130–200ई.) हिप्पोक्रेटिस के सिद्ध थे। उन्होंने मधुमेह की बीमारी को समझा और उस जमाने में इसकी सही व सटीक व्याख्या की। आर्टेंस ने ही इस बीमारी को 'डायबिटीज' (Diabetes) का नाम दिया जिसका ग्रीक में मतलब होता है साईफन। उन्होंने अपनी किताब में लिखा कि इस बीमारी में शरीर का माँस घुल-घुल

कर पेशाब में निकलता रहता है और मरीज कमजोर और दुबला होता जाता है। शरीर में पानी अंदर रुकता नहीं है साईफन की भाँति पेशाब से बाहर जाता रहता है।

उनके बताये लक्षण आज कोई 2000 साल बाद भी प्रासंगिक लगते हैं। उनके द्वारा दिया नाम डायबिटीज़ आज भी दुनिया भर में प्रचलित है। उन्हीं के सम्मान में अफ्रीकी राष्ट्र ट्रांसकी ने 1990 में उनके चित्र व उनके द्वारा उल्लेखित डायबिटीज़ के लक्षणों के साथ एक डाक टिकट जारी किया। (देखें चित्र नंबर 1)

प्राचीन हिन्दू संस्कृति में मधुमेह का उल्लेख आर्टेंस से भी पुराना है। आयुर्वेद में बीमारी का जितना सटीक एवं संपूर्ण विवरण उस युग में किया गया था वह आश्चर्यजनक है। इसा से सौ साल पहले आयुर्वेद के तीन प्रमुख चिकित्सक रहे चरक, सुश्रुत एवं वागभट्ट इन्होंने विभिन्न बीमारियों के बारे में पुस्तकें लिखी जिन्हें संहिता कहा जाता था। चरक संहिता में इस बीमारी का नाम मधुमेह यानि शहद की बरसात जैसा मीठा मूत्र एवं इक्सुमेह अर्थात गन्ने के रस सा मूत्र। इसके लक्षणों में बताया गया है कि शरीर कमजोर होता जाता है, फोड़े, फुंसी होते हैं। मुँह से बदबू आती है एवं मरीज बेहोश हो सकता है। उपचार के तरीके भी बताये गये हैं जिसमें कम भोजन कम वसा लेना, अधिक व्यायाम करना व मीठा न खाने पर जोर दिया गया है, साथ ही सावधान किया गया है कि मरीज को चोट न लगे।

भगवान धनवन्तरी को आयुर्वेद का देवता कहा जाता है। आयुर्वेद की पहचान भी भगवान धनवन्तरी को माना जाता है। आयुर्वेद के महत्व को रेखांकित करते हुए भगवान धनवन्तरी के चित्र के साथ नेपाल सरकार ने सन् 1977 में एक डाक टिकट जारी



चित्र क्र.-1



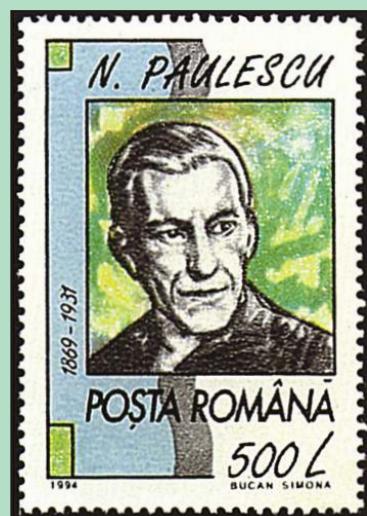
चित्र क्र.-2



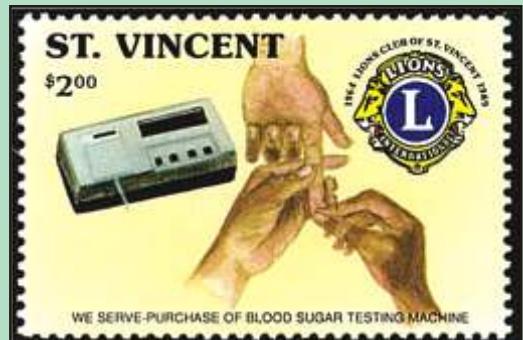
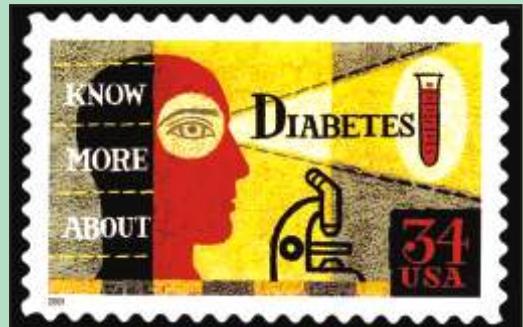
चित्र क्र.-4



चित्र क्र.-3



चित्र क्र.-5



किया।

जहाँ जूलजर, पजलेस्क आदि वैज्ञानिक जरा से के लिए चूक गए थे। वहीं बैटिंग और बेस्ट के लिए यह सब सरल न था, मगर सही कार्यप्रणाली समझ एवं ज्ञान के साथ उत्साह, मेहनत किस्मत ने असंभव को संभव बनाया। साथ ही मेक्लिओड की पहचान एवं कोलिप की कृशलता ने भी काफी मदद की और आखिर कर इंसुलिन की खोज का ताज आया बैटिंग और बेस्ट के हिस्से। (देखें चित्र-2)

सन् 1921-1922 में बेन्टिंग और बेस्ट ने कनाडा में इंसुलिन की खोज की। इस महान खोज ने आगे जाकर लाखों मधुमेह रोगियों की जान बचायी कनाडा सहित अनेक देशों ने बेन्टिंग बेस्ट ही नहीं उस कुतिया मारजोरी जिस पर बेन्टिंग एवं बेस्ट ने प्रयोग किये थे की फोटो वाले डाक टिकिट जारी किये।

कुवेत राज ने भी बैटिंग और बेस्ट को श्रद्धांजलि के रूप में इंसुलिन के पच्चासवीं वर्षगाँठ के अवसर पर ये डाक टिकिट जारी किया। (देखें चित्र-3)

हम सब जानते हैं कि इंसुलिन की खोज बैटिंग एवं बेस्ट ने की। मगर रोमानिया के लोगों का मानना है कि इंसुलिन की खोज रोमानिया के वैज्ञानिक “निकोलस पउलेस्कु” ने की मगर दुर्भाग्यवश उन्हें पहचान न मिल सकी। पउलेस्कु ने मधुमेह एवं पैंक्रियास पर काफी परिक्षण किए तथा एक तत्व भी तैयार किया जिसे नाम दिया “Pancreine” जो मधुमेही कुत्ते को लगाते ही उसका रक्त शर्करा स्तर सामान्य करने में सक्षम था। साथ ही पेशाब में जाने वाली शुगर एवं किटोन को भी रोका जा सका। अगस्त 1921 में (यानी बैटिंग से पहले) उनका लेख भी छ्पा था मगर किसी ने महत्व नहीं दिया और उन्हें कोई पहचान नहीं मिली। (देखें चित्र 4-5)

Rosalyn Sussman yallow ने 1947 में परमाणु शास्त्र में तालीम प्राप्त कर रेडिएशन पर काम शुरू किया। 1950 में उन्होंने पता लगाया की वे मरीज जो पशु से प्राप्त इंसुलिन का इंजेक्शन लगा रहे हैं उनके शरीर में Antibodies बन रहे हैं। जबकी मान्या थी कि इतना सा इंसुलिन ऐसा नहीं कर सकता फिर 1956 में उन्होंने एक तकनीक

शुरू की जिसे RIA के नाम से जाना गया। इसकी मदद से रक्त में धूम रहे सूक्ष्म से सूक्ष्म पेपटाईड रहे हारमोन की मात्रा के कण का पता लगाया जाता है। RIA के प्रयोग से हारमोन संबंधित रोगों के निदान एवं उपचार के लिए एक नई दिशा मिली। यही शुरूवात थी RIA से इन्सुलिन की जांच की जिसके लिए Yallow को 1977 में नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आज सारे लेब जो हारमोन की जांच करते हैं RIA प्रक्रिया का ही उपयोग करते हैं।

सन् 1995 Sierra Leone से जारी ये डाक टिकिट। (देखें चित्र-6)

मधुमेही को डराने का एवं सलाह देने का काम सब करते हैं। आइये जाने कुछ आम बातें।

1. मधुमेह में गुर्दे खराब होने की, हृदय रोग एवं नेत्ररोग होने की संभावना बढ़ जाती हैं इसलिए इनसे जुड़े पहलू की जांच साल में एक बार अवश्य करवाएँ। जैसे पेशाब में माइक्रो एलबोमिन, लिपिड, प्रोफाईल, ECG, रेटिना की जांच आदि। इन्हीं अंगों की सुरक्षा की जानकारी देते ये डाक टिकिट सन् 1974 में Dominican Republic से जारी। (देखें चित्र-7,8)

2. मधुमेह से जुड़ी परेशानियाँ तो हैं मगर एक खुश खबरी ये भी है कि मधुमेही की सजगता व विषयों की जानकारी 60% तक खतरे को टाल सकती है

इसी जागरूकता को बढ़ाने का संदेश देते डाकटिकिट सन् 2001 में USA से जारी किए गए। चित्र जो कहते हैं समझे अपनी बीमारी को। (देखें चित्र-9)

3. हम जानते हैं कि खतरा टालने के लिए जरूरी हैं विषय की जानकारी एवं आपके रक्त में शर्करा का स्तर। आपका काम आसान करने के लिए है। ग्लुकोमीटर। अब तो अनेकों प्रकार के ग्लुकोमीटर उपलब्ध हैं। 1970 के दशक में पहली बार लोगों तक पहुँचा—पहला ग्लुकोमीटर ये डाक टिकिट जो St.Vincent से सन् 1989 में जारी हुआ। ग्लुकोमीटर के उपयोग को दर्श रहा है। (देखें चित्र-10)

तो देखा आपने इतने से डाकटिकिटों ने कैसे समेटा हैं मधुमेह का इतिहास जो 3500 साल से भी ज्यादा पुराना है।

• • •

—राधिका श्रीवास्तव